22

पर्जन्यसूक्त और मनुमत्स्य कथा

देववाणी और वेदवाणी संस्कृत है। संस्कृत भाषा में अत्यन्त प्राचीन साहित्य प्राप्त होता है। वह ही वेद है। संस्कृत वाङ्मय आकाश में वेद ही मृगराज है। भारतभूमि पर धर्म और अध्यात्म वेद से ही देव जाने जाते है। वेद धर्म निरूपण करने में स्वतन्त्र भाव से प्रमाण है। स्मृति आदि तो वेदमूलक होने से उसकी ही प्रमाण पदवी को धारण करते है। इसलिए श्रुति स्मृति में विरोध होने पर सभी आस्तिकों के द्वारा श्रुति को ही श्रेष्ठ रूप से अङ्गीकार करना चाहिए। भारत के अज्ञात इतिहास में मनुष्य जीवन का ज्ञान वेद ज्ञान के बिना सम्भव नही है। वहाँ धर्म आदि पुरुषार्थ जहाँ विद्यमान है वे वेद कहलाते हैं। सायण के मत से अपौरुषेय वाक्य वेद है। मनुष्य सुख में लिप्त रहना चाहता है। और दु:ख से पीछा छुडाना चाहता है। वहाँ इष्ट प्राप्ति के लिए और अनिष्ट परिहार के लिए अलौकिक उपाय जो बताता है वह वेद कहलाता है। वैसे ही श्लोक–

''प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते।
एनं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।।'' इति।

वेद चार हैं – ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, और अथर्ववेद।

इस पाठ में पर्जन्यसूक्त और मनुमत्स्य कथा पाठ्य रूप से विद्यमान है। पूर्वार्ध में पर्जन्यसूक्त विद्यमान है, और उत्तरार्ध में मनुमत्स्य कथा लिखी गई है।

चार वेदों में वहाँ ऋग्वेद में अग्नि आदि देवों की स्तुति विद्यमान है, वैसे ही पर्जन्यदेव की भी स्तुति विद्यमान है। यह सूक्त ऋग्वेद के पाचवें मण्डल में विद्यमान तैयासीवाँ सूक्त है। इस सूक्त के पर्जन्य देवता, अत्रि ऋषि, प्रथम, पञ्चम षष्ठ, सप्तम, अष्टम, दशम,मन्त्र में त्रिष्टुप् छन्द है, द्वितीय तृतीय चतुर्थ में जगती छन्द है, नवम में अनुष्टुप् छन्द है। प्रत्येक सूक्त में सायणभाष्य को व्याख्या रूप से दिया हुआ है।

टिप्पणियाँ

उद्देश्य

इस पाठ को पढकर आप सक्षम होंगे :

- सूक्त में स्थित मन्त्रों का संहिता पाठ कर पाने में;
- सूक्त में विद्यमान मन्त्रों के पदपाठ को जान पाने में;
- सूक्त में स्थित मन्त्रों का अन्वय कर पाने में;
- सूक्त में स्थित मन्त्रों की व्याख्या कर पाने में;
- सूक्त में विद्यमान मंत्रो के सरलार्थ को जान पाने में;
- मन्त्र में स्थित व्याकरण को समझ कर पाने में;
- सूक्त के तात्पर्य और सूक्त के तत्त्व को जान पाने में;
- सूक्त के अर्थ को समझ कर सूक्त की महिमा को समझ पाने में;
- वैदिक शब्दो को समझ पाने में;
- वैदिक और लौकिक का भेद समझ पाने में;
- वैदिक रूपों को जान पाने में।

22.1 मूलपाठ (पर्जन्यसूक्त)

अच्छा॑ वद त॒वसं॑ गी॒र्भिरा॒भिः स्तु॒हि प॒र्जन्यं॒ नम॒सा वि॑वास।
कनि॑क्रदद्वृष॒भः जी॒रदा॑नू रेतो॑ दधा॒त्योष॑धीषु॒ गर्भ॑म्॥१॥

वि वृ॒क्षान् ह॑न्त्यु॒त ह॑न्ति र॒क्षसो॒ विश्वं॑ बिभाय॒ भुव॑नं म॒हाव॑धात्।
उ॒तान॑ागा ईषते॒ वृष्ण्या॑वतो॒ यत्प॒र्जन्यः॑ स्त॒नय॒न् हन्ति॑ दु॒ष्कृतः॑॥२॥

र॒थीव॒ क॒शयाश्वाँ॑ अभिक्षि॒पन्ना॒विर्दू॒तान्कृ॑णुते व॒र्ष्याँ॑३ अह।
दू॒रात्सिं॒हस्य॑ स्त॒नथा॒ उदी॑रते॒ यत्प॒र्जन्यः॑ कृ॒णु॒ते व॒र्ष्यं॑१ नभः॑॥३॥

प्र वा॒ता वान्ति॑ प॒तय॑न्ति वि॒द्युत॒ उदोष॑धी॒र्जिह॑ते॒ पिन्व॑ते॒ स्वः॑।
इरा॒ विश्व॑स्मै॒ भुव॑नाय जायते॒ यत्प॒र्जन्यः॑ पृथि॒वीं रे॒तसाव॑ति॥४॥

यस्य॑ व्र॒ते पृ॑थि॒वी नन्न॑मीति॒ यस्य॑ व्र॒ते श॒फव॒ज्जर्भु॑रीति।
यस्य॑ व्र॒त ओष॑धीर्वि॒श्वरू॑पाः॒ स नः॑ पर्जन्य॒ महि॒ शर्म॑ यच्छ॥५॥

दि॒वो नो॑ वृ॒ष्टिं म॑रुतो ररीध्वं॒ प्र पि॑न्वत॒ वृष्णो॒ अश्व॑स्य॒ धाराः॑।
अ॒र्वाङ्ङे॒तेन॑ स्तनयि॒त्नुने॒ह्यपो॑ नि॑षि॒ञ्चन्नसु॑रः पि॒ता नः॑॥६॥

अभि क्रन्द स्तनय गर्भमा धा उदन्वता परि दीया रथेन।
दृतिं सुकर्ष विषितं न्यञ्चं समा भवन्तूद्वतो निपादाः॥७॥

महान्तं कोशमुदचा नि षिञ्च स्यन्दन्तां कुल्या विषिताः पुरस्तात्।
घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्यः॥८॥

यत्पर्जन्य कनिक्रदत्स्तनयन् हंसि दुष्कृतः।
प्रतीदं विश्वं मोदते यत् किंच पृथिव्यामधि॥९॥

अवर्षीर्वर्षमुदु षू गृभायाकर्धन्वान्यत्येतवा उ।
अजीजन ओषधीर्भोजनाय कमुत प्रजाभ्योऽविदः मनीषाम्॥१०॥

22.1.1 मूलपाठ की व्याख्या (पर्जन्यसूक्त) : श्लोक 1-5

अच्छा वद तवसं गीर्भिराभिः स्तुहि पर्जन्यं नमसा विवास।
कनिक्रदद्वृषभः जीरदानू रेतो दधात्योषधीषु गर्भम्॥१॥

पदपाठ - अच्छ। वद। तवसम्। गीःऽभिः। आभिः। स्तुहि। पर्जन्यम्। नमसा। आ। विवास। कनिक्रदत्। वृषभः। जीरऽदानुः। रेतः। दधाति। ओषधीषु। गर्भम्॥

अन्वय - आभिः गीर्भिः तवसम् अच्छ वद, नमसा पर्जन्यं स्तुहिः, आ विवास, जीरदानुः वृषभः कनिक्रदत् ओषधिषु गर्भं रेतः दधाति।

व्याख्या - हे स्तोता, तुम बलवान पर्जन्य देव के अभिमुख्यवर्ती होकर उनकी प्रार्थना करो। स्तुति वचनों से उनका स्तवन करो यास्क ने अनेक प्रकार से निरुक्त में कहा - 'पर्जन्यस्तृपेराद्यन्त विपरीतस्य तर्पयिता जन्यः परो जेता वा जनयिता वा प्रार्जयिता वा रसानाम्' (निरु० १०.१०) इति। हविर्लक्षण अन्न से से उनकी परिचर्या करो। जो जलवर्षक दानशील गर्जनकारी पर्जन्य वृष्टिपात द्वारा औषधियों को गर्भयुक्त करे।

सरलार्थ - (हे स्तोता) सामने जाकर बलवान पर्जन्य को अपना अभिप्राय ठीक से बताओ, स्तुति वचनों से उनकी प्रशंसा करो एवं हव्य अन्न द्वारा उनकी सेवा करो, गर्जन शब्द करने वाले, वर्षा कारक एवं शीघ्र दान करने वाले पर्जन्य ओषधियों में गर्भ धारण करते है।

व्याकरण विमर्श

- **विवास** - विपूर्वक वस्-धातु से मध्यम पुरुष एकवचन का यह रूप है।
- **कनिक्रदत्** - क्रन्द्-धातु से यङ् लुङन्त प्रथम पुरुष एकवचन का यह रूप है।
- **दधाति** - धा-धातु से लट् प्रथमा एकवचन का यह रूप है।

टिप्पणियाँ

वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति रक्षसो विश्वं बिभाय भुवनं महावधात्।
उतानागा ईषते वृष्ण्यावतो यत्पर्जन्यः स्तनयन् हन्ति दुष्कृतः॥२॥

पदपाठ – वि। वृक्षान्। हन्ति। उत। हन्ति। रक्षसः। विश्वम्। बिभाय। भुवनम्। महाऽवधात्। उत। अनागाः। ईषते। वृष्ण्यऽवतः। यत्। पर्जन्यः। स्तनयन्। हन्ति। दुःऽकृतः॥

अन्वय – पर्जन्यः वृक्षान् विहन्ति उत रक्षसकः हन्ति। महाबधात् विश्वं भुवनं विभाय यत् स्तनयन् दुष्कृतः हन्ति अनागाः वृष्ण्यावतः ईषते।

व्याख्या – इस मन्त्र में निरुक्त में स्पष्ट व्याख्या की है उसको ही यहाँ पर लिखते है, – 'पर्जन्य वृक्षों को नष्ट करता है, राक्षसों का वध करता है और महान वध द्वारा सम्पूर्ण भुवन को भय प्रदर्शित करते है। गरजने वाले पर्जन्य पापियों का संहार करते है। अतएव निरपराधि भी वर्षण करने वाले पर्जन्य के निकट से भयभीत होकर पलायमान हो जाते है (निरुक्त १०.११)' इति॥

सरलार्थ – पर्जन्यदेव वृक्षों और राक्षसों का नाश करते है। सारा संसार इनके महान वध से डरता है। वर्षा करने वाला पर्जन्य जब गर्जन करते हुए दुष्कर्मियो का नाश करते है, तो पाप रहित लोग भी उनसे डरते है।

व्याकरण विमर्श

- **स्तनयन्** – स्तन्धातु से शतृप्रत्यय करने पर प्रथमा एकवचन में यह रूप बनता है।
- **ईषते** – ईष् धातु से लट् प्रथमपुरुष एकवचन में यह बनता है।
- **विभाय** – भी धातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन में यह रूप बनता है।

रथीव कशयाश्वाँ अभिक्षिपन्नाविर्दूतान्कृणुते वर्ष्याँ३ अह।
दूरात्सिंहस्य स्तनथा उदीरते यत्पर्जन्यः कृणुते वर्ष्यं१ नभः॥३॥

पदपाठ – रथीऽइव। कशया। अश्वान्। अभिऽक्षिपन्। आविः। दूतान्। कृणुते। वर्ष्यान्। अह। दूरात्। सिंहस्य। स्तनथाः। उत्। ईरते। यत्। पर्जन्यः। कृणुते। वर्ष्यम्। नभः॥

अन्वय – कशया अश्वान् अभिक्षिपन् रथी इव अहं वर्ष्यान् दूतान् आविष्कृणुते यत् पर्जन्यः नभः वर्षम् कृणुते, दूरात् सिंहस्य स्तनथाः उदीरते।

व्याख्या – रथी जिस प्रकार से कशाघात द्वारा घोड़ों को उत्तेजित करके योद्धाओं का अविष्कृत करता है उसी प्रकार पर्जन्य भी मेघो को प्रेरित करके वारिवर्षक मेघों को प्रकट करते हैं। जब तक पर्जन्य जलद समुह को अन्तरिक्ष में व्याप्त करते हैं तब तक सिंह की तरह गरजने वाले मेघ का शब्द दूर से ही उत्पन्न होता है।

सरलार्थ – रथी योद्धा जिस प्रकार कोड़े से घोड़ो को मारता हुआ योद्धाओं को प्रकट करता है, उसी प्रकार पर्जन्य जब आकाश को वर्षा से युक्त करते हैं, तब उनका गर्जन सिंह के समान दूर से उत्पन्न होता है।

व्याकरण विमर्श

- **अभिक्षिपन्** – अभि पूर्वकक्षिप्–धातु से शतृप्रत्यय करने पर प्रथम पुरुष एकवचन का यह रूप है।
- **उदीरते** – उत् पूर्वक ईर् धातु से लट् प्रथम पुरुष एकवचन का यह रूप है।
- **कशया** – कश् धातु से अच् प्रत्यय और टाप् प्रत्यय करने पर तृतीया बहुवचन का यह रूप है।

प्र वाता वान्ति पतयन्ति विद्युत उदोषधीर्जिहते पिन्वते स्वः।
इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत्पर्जन्यः पृथिवीं रेतसावति॥४॥

पदपाठ – प्र। वाताः। वान्ति। पतयन्ति। विऽद्युतः। उत्। ओषधीः। जिहते। पिन्वते। स्व१रितिस्वः। इरा। विश्वस्मै। भुवनाय। जायते। यत्। पर्जन्यः। पृथिवीम्। रेतसा। अवति॥

अन्वय – यत् पर्जन्यः पृथिवीं रेतसा अवति, वताः प्रवान्ति, विद्युतः पतयन्ति, ओषधीः उज्जिहते. स्वः पिन्वते, विश्वस्मैस भुवनाय इरा जायते।

व्याख्या – 'प्र वाताः' यहाँ पर चतुर्थी पर्जन्यस्य चरोर्याज्या। और सूत्र में कहा गया है 'प्र वाता वान्ति पतयन्ति विद्युत् इत्यग्न्याधेय प्रभृति' (आश्व०२.१५) इति। जब तक पर्जन्य वृष्टि द्वारा भूमि की रक्षा करते है, तब तक वृष्टि के लिए हवा बहती है चारो तरफ बिजली चमकती रहती है, ओषधिया बढती रहती है। अन्तरिक्ष स्रावित होता रहता है और सम्पूर्ण भुवन की हित साधना में भूमि समर्थ होती रहती है।

सरलार्थ – जब पर्जन्यदेव पृथिवी को जल से सिचता है, तब वायु शीघ्र बहती है, बिजली गिरती है, ओषधी उत्पन्न होती है, आकाश टपकने लगता है, सम्पूर्णलोक के लिए पृथिवी (कल्याण प्रदान करने में) समर्थ होती है।

व्याकरण विमर्श

- **वान्ति** – वा–धातु से लट् प्रथमपुरुषबहुवचन में।
- **पतयन्ति** – पत्–धातु से लट् प्रथमपुरुषबहुवचन में।
- **उज्जिहते** – उत्पूर्वक आत्मनेपदहा–धातु से लट् प्रथमपुरुष एकवचन में।
- **पिन्वते** – आत्मनेपद पिन्व्–धातु से लट् प्रथमपुरुष एकवचन में।

यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति।
यस्य व्रत ओषधीर्विश्वरूपाः स नः पर्जन्य महि शर्म यच्छ॥५॥

पदपाठ – यस्य। व्रते। पृथिवी। नन्नमीति। यस्य। व्रते। शफऽवत्। जर्भुरीति। यस्य। व्रते। ओषधीः। विश्वऽरूपाः। सः। नः। पर्जन्य। महि। शर्म। यच्छ॥

अन्वय – यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवत् जर्भुरीति, यस्य व्रते ओषधी: विश्वरूपा: स पर्जन्य: न: महि शर्म यच्छ।

व्याख्या – हे पर्जन्य तुम्हारे ही कर्म से भूमि अवन्नत होती है तुम्हारे ही कर्म से पाद युक्त या खुर विशिष्ट पशु पुष्ट होते है या गमन करते है। तुम्हारे ही कर्म से ओषधि विविध रूप धारण करती है। हे पर्जन्य तुम हम लोगो को महान सुख प्रदान करो।

सरलार्थ – जिसकी आज्ञा से पृथिवी झुकती है, जिसकी आज्ञा से खुरधारी पशु विचरण करते है, जिसकी आज्ञा से ओषधियाँ विविध रूपों में होती है। हे पर्जन्य देव! तुम हमारे लिए महान सुख प्रदान करो।

व्याकरण विमर्श

- **नन्नमीति** – नम्-धातु से यङ्लुक लट् प्रथमपुरुष एकवचन में।
- **जर्भुरीति** – भुर्-धातु से यङ्लुक लट् प्रथमपुरुष एकवचन में।
- **यच्छ** – यम्-धातु से लोट मध्यमपुरुष एकवचन में।

पाठगत प्रश्न 22.1

1. पर्जन्यसूक्त किस वेद के अन्तर्गत आता है?
2. पर्जन्यसूक्त का ऋषि कौन है?
3. पर्जन्यसूक्त का देवता कौन है?
4. विवास यह पद कैसे बना?
5. कनिक्रदत् यह पद कैसे बना?
6. पर्जन्य किसको मारता है?
7. ईषते इस पद की निष्पत्ति कैसे हुई?
8. विभाय यह पद कैसे बना?

22.1.2 मूलपाठ की व्याख्या (पर्जन्यसूक्त) : श्लोक 6-10

दिवो नों वृष्टिं मरुतो ररीध्वं प्र पिन्वत वृष्णो अश्वस्य धारा:।
अर्वाङेतेन स्तनयित्नुनेह्यपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः॥६॥

पदपाठ – दिवः। नः। वृष्टिम्। मरुतः। ररीध्वम्। प्र। पिन्वत। वृष्णः। अश्वस्य। धाराः। अर्वाङ्। एतेन। स्तनयित्नुना। आ। इहि। अपः। निऽसिञ्चन्। असुरः। पिता। नः॥

अन्वय – मरुतः दिवः न वृष्टिं ररीध्वम्, वृष्णः अश्वस्य धाराः प्रपिन्वतः। नः पिता असुरः अपः निषिञ्चन् एतेन स्तनयित्नुना अर्वाङ् एहि।

व्याख्या – हे मरुत! तुम लोग अन्तरिक्ष से हम लोगो के लिए वृष्टि प्रदान करो। वर्षणकारी और सर्वव्यापी मेघ की उदक धारा को क्षरित करो। वर्षाओं। हे पर्जन्य! तुम जलसेचन करके गर्जनशील मेघ के साथ हम लोगो के अभिमुख आगमन करो। तुम वारिवर्षक हो और हम लोगो के पालक हो।

सरलार्थ – हे मरुत, अन्तरिक्ष से हमारे लिए जल प्रदान करो। वर्षा करते हुए मेघ की धारो को नीचे की और प्रवाहित करो। हमारे पालक, प्राण देने वाले आप जलदेने कके लिए गर्जना करते हुए मेघो के साथ आओ।

व्याकरण विमर्श

- **ररीध्वम्** – आत्मनेपदि रा-धातु से लट् मध्यमपुरुषबहुवचन में।
- **प्रपिन्वत** – प्रपूर्वकपिन्व्-धातु से लोट मध्यमपुरुषबहुवचन में
- **निषिञ्चन्** – निपूर्वकसिञ्च्-धातु से शतृप्रत्यय करने पर प्रथमा एकवचन में।
- **असुरः** – असून् प्राणान् राति ददाति इति असुरः।

अभि क्रन्द स्तनय गर्भमा धा उदन्वता परि दीया रथेन।
दृतिं सुकर्ष विषितं न्यञ्चं समा भवन्तूद्वतो निपादाः॥७॥

पदपाठ – अभि। क्रन्द। स्तनय। गर्भम्। आ। धाः। उदन्वता। परिऽदीय। रथेन। दृतिम्। सु। कर्ष। विऽसितम्। न्यञ्चम्। समाः। भवन्तु। उत्ऽवतः। निऽपादाः॥

अन्वय – अभि क्रन्द, स्तनय, गर्भम् आ धाः, उदन्वता रथेन परि दीय, विषितं दृतिं न्यञ्चम् सु कर्ष। उद्ववतः निपादाः समाः भवन्तु।

व्याख्या – पृथ्वी के ऊपर तुम शब्द करो गर्जन करो। जल के द्वारा औषधियों को गर्भ को धारण कराओ, वारिपूर्ण रथ द्वारा अन्तरिक्ष में परिभ्रमण करो, उदकधारक मेघ को वृष्टि के लिए आकृष्ट करो या विमुक्त बंधन करो, उस बंधन को अधोमुख करो, उन्नत और निम्नतम प्रदेशो को समतल करो। अर्थात सभी को जल से परिपूर्ण करो।

सरलार्थ – (हे पर्जन्यदेव) (भूमि के) और अभिमुख करके गर्जना करो। (औषधियों में) गर्भ (जल को) स्थापित करो। जलयुक्त रथ के चारो और भ्रमण करो। विशिष्टरूप से बंधे हुए जलपात्र को नीचे की और मुख करके जल को खोलो। जिससे ऊर्ध्वस्थान औरनीचे के स्थानसमान हो।

व्याकरण विमर्श

- **क्रन्द** – क्रन्द्–धातु से लोट मध्यमपुरुष एकवचन में।
- **स्तनय** – स्तन्–धातु से लोट मध्यमपुरुष एकवचन में।
- **धाः** – धा–धातु से लुङ मध्यमपुरुष एकवचन में।
- **दीया** – दी–धातु से लोट मध्यमपुरुष एकवचन में वैदिक रूप है।

महान्तं कोशमुदचा नि षिञ्च स्यन्दन्तां कुल्या विषिताः पुरस्तात्।
घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्यः॥८॥

पदपाठ – महान्तम्। कोशम्। उत्। अच। नि। सिञ्च। स्यन्दन्ताम्। कुल्याः। विऽसिताः। पुरस्तात्। घृतेन। द्यावापृथिवी इति। वि। उन्धि। सुऽप्रपानम्। भवतु। अघ्न्याभ्यः॥

अन्वय – महान्तं कोशम् उदच, निषिञ्च। कुल्याः विषिताः पुरस्तात् स्यन्दन्ताम्। घृतेन द्यावापृथिवी वि उन्धि। अघ्न्याभ्यः सु प्रपाणं भवतु।

व्याख्या – हे पर्जन्य तुम कोशस्थानीय जल भण्डार महान मेघ को ऊर्ध्व भाग में उद्वेलित करो। एवं और उसे वहाँ से नीचे की और क्षारित करो। अर्थात् वारिवर्षण कराओ। अप्रतिहत वेग्शालिनी नदियाँ पूर्वाभिमुख या पुरोभाग में प्रवाहित हो। जल द्वारा द्यावा पृथ्वी को आर्द्र करते हो। गायो के लिए पान योग्य सुंदर जल प्रचुर मात्रा में हो।

सरलार्थ – (हे पर्जन्यदेव) मेघ को ऊपर की और ले जाकर के जल को नीचे की और बरसाओ। नदियां बन्धन रहित होती हुई अच्छी प्रकार से बहे। जल से द्युलोक का तथा पृथिवीलोक का विशेषरूप से सेचन करो। गायो के लिए पीने योग्य जल को बरसाओ।

व्याकरण विमर्श

- **उदच** – उत्पूर्वक अच्–धातु से लोट मध्यमपुरुष एकवचन में वैदिक रूप है।
- **निषिञ्च** – निपूर्वक सिञ्च्–धातु से लोट मध्यमपुरुष एकवचन में।
- **स्यन्दन्ताम्** – स्यन्द्–धातु से लोट मध्यमपुरुषबहुवचन में।
- **उन्धि** – उद्–धातु से लोट मध्यमपुरुष एकवचन में।

यत्पर्जन्य कनिक्रदत्स्तनयन् हंसि दुष्कृतः।
प्रतीदं विश्वं मोदते यत् किंच पृथिव्यामधि॥९॥

पदपाठ – यत्। पर्जन्य। कनिक्रदत्। स्तनयन्। हंसि। दुःऽकृतः। प्रति। इदम्। विश्वम्। मोदते। यत्। किम्। च। पृथिव्याम्। अधि॥

अन्वय – पर्जन्य! यत् कनिक्रदत् स्तनयन् दुष्कृतः हंसि इदं विश्वं यत् किंच पृथिव्याम् अधि मोदते।

व्याख्या – हे पर्जन्य जब तुम गंभीर गर्जन करके पापिष्ठ मेघो को विदीर्ण करते हो, तब यह सम्पूर्ण विश्व और अधिष्ठाता चराचरात्मक पदार्थ ह्रष्ट होते है अर्थात वृष्टि होने से सम्पूर्ण जगत प्रसन्न होता है।

सरलार्थ – हे पर्जन्य देव जब आप तीव्र शब्द को करते हुए, गर्जना करते हुए दुष्कर्म करने वाले मनुष्यों को मारते हो उनका हनन करते हो तब जो ये पृथिवी पर रहते है वे आनन्दित होते है।

व्याकरण विमर्श

- **हंसि** – हन्–धातु से लट् मध्यमपुरुष एकवचन में।
- **मोदते** – आत्मनेपद मुद्–धातु से लट् प्रथमपुरुष एकवचन में।

अवर्षीर्वर्षमुदु षू गृभायाकर्धन्वान्यत्येतवा उ।
अजीजन ओषधीर्भोजनाय कमुत प्रजाभ्योऽविदः मनीषाम्॥१०॥

पदपाठ – अवर्षीः। वर्षम्। उत्। ऊँ इति। सु। गृभाय। अकः। धन्वानि। अतिऽएतवै। ऊँ इति। अजीजनः। ओषधीः। भोजनाय। कम्। उत। प्रऽजाभ्यः। अविदः। मनीषाम्॥

अन्वय – वर्षम् अवर्षी। उत् उ सु गृभाय। धन्वानि अति एतवै अकः। भोजनाय कम् ओषधीः अजीजनः उत प्रजाभ्यः मनीषाम् अविदः।

व्याख्या – इसने अत्यधिक वर्षा की। हे पर्जन्य तुम ने वर्षा की। अभी वृष्टि का संवरण करो। तुमने मरुभुमियों को सुगम बनाने के लिए जल युक्त किया है। मनुष्यों के भोग के लिए ओषधियों को उत्पन्न किया है। प्रजाओ के समीप से तुमने स्तुतिया प्राप्त की है। भोजन के लिए, धन के लिए अथवा भोग के लिए किसके लिए 'शिशिरं जीवनाय कम्' इतिवद् पादपूरण (निरु. १.१०)। और भी प्रजाओ के सुख के लिय स्तुति प्राप्त की।

सरलार्थ – (हे पर्जन्य देव) आप वर्षा करो। आप अब जल को पूर्णरूप से रोक लो। जलहीन प्रदेश का अतिक्रमण करके जाने योग्य हो। भोग करने के लिए औषधियों को उत्पन्न करो, तथा लोक से प्रशंसा को प्राप्त करो।

व्याकरण विमर्श

- **अवर्षीः** – वृष्–धातु से लुङ मध्यमपुरुष एकवचन में।
- **गृभाय** – ग्रभ्–धातु से लट् अथवा लोट मध्यम पुरुष एकवचन में। कुछ का मत है की ग्रह–धातु से यह वैदिकरूप है।
- **एतवै** – इण्–धातु से तुमर्थक् तवैप्रत्यय करने पर।
- **अकः** – कृ–धातु से लुङ मध्यमपुरुष एकवचन में यह वैदिक रूप है।

टिप्पणियाँ

पाठगत प्रश्न 22.2

1. ररीध्वम् यह रूप कैसे बना?
2. असुर: इसका निवर्चन लिखो।
3. दीया यह रूप कहाँ का है?
4. 'महान्तं कोशम्...' इस मन्त्र को पूर्ण करो।
5. गृभाय इसका क्या अर्थ है?
6. हंसि यह रूप कहाँ का है?

22.2 पर्जन्यसूक्त का सार

ऋग्वेद के पांचवे मण्डल में तेरासिवे सूक्त को पर्जन्यसूक्त कहते है। इस सूक्त के अत्रि ऋषि, पर्जन्य देवता, और जगति आदि छन्द है। इस सूक्त में सम्पूर्ण रूप से दश मन्त्र है। और उन मन्त्रों में पर्जन्यदेवता को उद्दिश्य करके अनेक प्रार्थना की गई है। इस सूक्त में प्रधान रूप से जलवर्षण के लिए प्रार्थना का विधान है। वैसे ही यहाँ पर्जन्यदेवता का माहात्म्य को प्रकट किया जाता है, वहाँ उसके भयङ्कर रूप का वर्णन किया जाता है, और इस पृथिवी पर उपयुक्त रूप से जलवर्षण के द्वारा धन धान्य से पूर्ण करने के लिए प्रार्थना करते है।

वहाँ आदि में सूक्ति के द्वारा कहा जाता है की उस महान् पर्जन्यदेव की स्तुति करनी चाहिए, और नमस्कार माध्यम से उसे प्रसन्न करना चाहिए। क्योकि वह ही जलवर्षा के द्वारा औषधियों में गर्भरूप से बीजो को धारण करते है। इसलिए वेद में कहते है -

अच्छा वद तवसं गीर्भिराभि:स्तुहि पर्जन्यं नमसा विवास।
कनिक्रदद् वृषभो जीरदानू रेतो दधात्योषधीषु गर्भम्॥ इति।

वह ही वृक्षों को खण्ड में विभक्त करता है, और भयङ्कर अस्त्र के द्वारा गर्जना करता हूँ इस संसार में पापि मनुष्यों का नाश करता है। रथ पर आरूढ स्वामी के समान जाता हुआ अपने दूत मेघो को प्रकट करता है। शेर के समान गर्जना करता हुआ सम्पूर्ण आकाश को मेघ से आच्छादित करता है। वह वायु को बहता है, बिजली को प्रकट करता है, और ओषधियों को उत्पन्न करता हुआ जल से पृथिवी पर स्थित प्राणियो की रक्षा करता है।

इसलिए यहाँ पर पर्जन्यदेव को उद्देश्य करके विविध प्रार्थना का उच्चारण करते हैं। जैसे -जिसकी आज्ञा से ओषधियाँ विविध रंग से युक्त होती हैं, वह पर्जन्य देव हमारी रक्षा करे। आकाश से हमारे लिए वर्षा को प्रदान करो, शक्तिशाली मेघों के द्वारा जलधारा को प्रवाहित करे, और जल सेचन करके पिता के समान हमारी रक्षा करे। महाजलपात्र से पृथिवी पर जल की वर्षा करे और

नदियाँ बन्धनरहित होकर आगे प्रवाहित होकर बहें, अवध्य गायों के लिए पर्याप्त जल हो। घृतरूप वर्षाजल से सम्पूर्ण पृथिवी का तथा आकाश का सेचन करो। इसलिए वेद में कहा गया है –

महान्तं कोशमुदचा नि षिञ्च स्यन्दन्तां कुल्या विषिताः पुरस्तात्।
घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्यः॥ इति।

और कहते है की – हे पर्जन्यदेव ! अत्यधिक गर्जना भयङ्कर शब्दो को करता हुआ जब आप पापी मनुष्य को मारते हो, तब सम्पूर्ण पृथिवी प्रसन्न होती है। और प्रार्थना करती है की जलवर्षा के अनन्तर, और औषधियों का उत्पादन करने के बाद, और हमारी स्तुति को सुनकर आप पूर्णरूप से स्थिर हों।

22.3 पर्जन्य देवता का स्वरूप

पर्जन्यसूक्त में पर्जन्यदेवता के स्वरूप को बताया गया है। पर्जन्य वृष्टि करने वाले देव हैं। इसका प्रधान वैशिष्ट्य यह है जल की वर्षा करते हैं, जलमय रथ से आरूढ होकर भ्रमण करते हैं। जलचर्म को लेकर वह जल को सीचता हैं। पर्जन्य शीघ्रवर्षा कराते है। जब यह आकाश को मेघयुक्त करता है, तब शेर के समान भीषण गर्जना करते हैं।

पर्जन्य सम्पूर्ण पिता और माता कहलाता है। वैसे ही वह वर्षा द्वारा पृथिवी पर जलरूपवीर्य को धारण करता हुआ प्राणियो के लिए अन्न आदि खाद्य पदार्थो को उत्पन्न करता है। इसलिए यह विश्व का पिता होता है। इसका प्रधान कार्य तो जल वर्षा ही करना है। वैसे भी अन्य भी कुछ कार्य उसके है। जैसे वह बुरे काल का नाश करता है, वज्रपात के द्वारा वृक्षों का नाश करता है, और भयङ्कर असुरो को भी अपने भयङ्कर अस्त्र के द्वारा मारता है। उसकी विशाल शक्ति के सामने सम्पूर्ण जगत् ही नतमस्तक होता है। पर्जन्य ही पृथिवी को सत्त्वयुक्त करता है, और औषधियों को अनेक पल्लव और फूल के द्वारा सुशोभित करते हैं।

इसके विविध देवों के साथ सम्पर्क हैं। वैसे मरुद् और वायुदेव के साथ इसके घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। ऋग्वेद में अग्निदेव के साथ इसकी स्तुति की गई है। वर्षा के देवता रूप इसका देवेन्द्र इन्द्र के साथ तुलना की गई है। पृथिवी इसकी पत्नी कहलाती है, परन्तु अन्य जगह वशा इनकी पत्नी है, ऐसा भी उल्लेख प्राप्त होता है। सोम पर्जन्यदेव का पुत्र है ऐसा प्रसिद्ध है।

यह पर्जन्यदेव भौतिक पर्जन्य का अर्थात् मेघ का मूर्तरूप है। प्राचीन ऋषियों ने वर्षा के तथा गर्जन शक्ति वाले मूर्तिरूप पर्जन्यदेव के दर्शन को प्राप्त करते है। और इस प्रकार पर्जन्यसूक्त में पर्जन्यदेव के अनेक महानता को जाना जाता है। जैसे –वह जलवर्षक औषधियों में गर्भरूप से बीज को धारणा करता है। वह ही वृक्षों को खण्ड के रूप में विभक्त करता है, और भयङ्कर अस्त्र के द्वारा गर्जना इस संसार में पापी मनुष्यों का नाश करते हैं। इसलिए वेद में कहते है –

वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति रक्षसो विश्वं बिभाय भुवनं महावधात्।
उतानागा ईषते वृष्ण्यावतो यत्पर्जन्यः स्तनयन् हन्ति दुष्कृतः॥ इति।

रथ पर आरूढ स्वामी के समान जाता हुआ अपने दूत मेघो को प्रकट करता है। शेर के समान गर्जना करते हुए सम्पूर्ण आकाश को मेघ से आच्छादित करता है। वह वायु को बहता है, बिजली को प्रकट करता है, औषधियों को उत्पन्न करते है और जल से पृथिवी के प्राणियो की रक्षा करता है। पर्जन्यदेव ही अन्न के उत्पादन करने में मूल कारण होता है। इसलिए गीता में कहा है –

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥ इति।

पाठ सार (पर्जन्यसूक्त का)

इस सूक्त में ऋषि अत्रि कहते है की, हे स्तोता! बलवान पर्जन्य की गीतों के द्वारा स्तुति करो। जो पर्जन्यजल को शीघ्र बरसाता है गर्जना युक्त शब्द को करता है, औषधियों में गर्भस्थानीय शक्ति को जल के रूप में धारण करता है उसकी देव की स्तुति करो। पर्जन्य वृक्षों को काटता है और राक्षसों को मारता है। जब पर्जन्य बुरे करने वाले को पापी को मारता है, तब निर अपराधी भी डरकर पलायन कर जाता है। और जब पर्जन्य अन्तरिक्ष में वर्षा करता है, तब वह रथ में जुड़े हुए घोड़ो को तेजी से चलाता हुआ वर्षा के दूतो को अथवा मेघो को प्रकट करता है। वर्षा के लिए वायु बहती है, बिजली अच्छी प्रकार से चमकती है, औषधियाँ बढती हैं, अपने को अन्तरिक्ष में व्याप्त करता है, सभी भुवन के लिए भूमि अन्न को उत्पन्न करती है, जब पर्जन्य पृथिवी को जल से परिपूर्ण करता है। जिस पर्जन्य के कार्य से पृथिवी अन्न से परिपूर्ण होती है, जिसके व्रत से ही गाय आदि पशु गमन करते है, जिसके कार्यो से औषधियाँ अनेक रूप वाली होती है, हे पर्जन्य! वह अपने महान से हमको महान सुख प्रदान करे। इस प्रकार हे मरुत तुम अन्तरिक्ष से हमारी और अभिमुख करके आओ। हे पर्जन्य! तुम महान बढ़े हुए कोशस्थानीय मेघ का उद्गम है, वैसे करके हमारा सेचन करो, जिससे नदिया परिपूर्ण होकर प्रवाहित होकर बहती है। हे पर्जन्य! जब तुम बढकर बुरे कर्म को करने वाले को मेघ मारता है, तब यह विश्व प्रसन्न होता है, क्योंकि वर्षा ही सभी जगत के प्रीतिकारण के रूप में प्रसिद्ध है।

मनुमत्स्यकथा

शुक्लयजुर्वेद में एक ही ब्राह्मण विद्यमान है। उसका नाम शतपथब्राह्मण है। यह ब्राह्मणसाहित्य में सबसे विशाल है। शुक्लयजुर्वेद की दो शाखा है – काण्वशाखा और माध्यन्दिनशाखा। दोनों ही शाखा का यह ब्राह्मण प्राप्त होता है। माध्यन्दिनशाखा का ब्राह्मण के चौदह काण्डऔर सौ अध्याय है। इन शाखाओ में माध्यन्दिनशाखा बहुत ही प्रसिद्ध है। इसी ही शाखा के प्रथमकाण्ड के आठवे अध्याय में मनुमत्स्यकथा इस कथा को प्राप्त करता है। इस कथा में मनुमत्स्य की रमणीय कथा विद्यमान है। वह ही इस पाठ में प्रस्तुति करता है।

22.4 मूलपाठ मनुमत्स्यकथा

मनवे ह वै प्रातः। अवनेग्यमुदकमाजह्रुर्यथेदं पाणिभ्यामवनेजनायाहरन्त्येवं तस्यावनेनिजानस्य मत्स्यः पाणी आपेदे॥ १॥

स हास्मै व्वाचमुवाद। बिभृहि मा पारयिष्यामि त्वेति कस्मान्मा पारयिष्यसीत्यौघ इमाः सर्वाः प्रजा निर्वोढा ततस्त्वा पारयितास्मीति कथं ते भृतिरिति॥२॥

स होवाच। यावद्वै क्षुल्लका भवामो बह्वी वै नस्तावन्नाष्ट्रा भवत्युत मत्स्य एव मत्स्यं गिलति कुम्भ्यां माऽग्रे बिभरासि स यदा तामतिव्वर्धा अथ कर्षू खात्वा तस्यां मा बिभरासि स यदा तामतिव्वर्धाऽअथ मा समुद्रमभ्यवहरासि तर्हि वा अतिनाष्ट्रो भवितास्मीति॥३॥

शश्वद्ध झषऽआस। स हि ज्येष्ठं व्वर्धतेऽथेतिथीं समां तदौघ आगन्ता तन्मा नावमुपकल्प्योपासासै स औघ उत्थिते नावमापद्यासै ततस्त्वा पारयितास्मीति॥४॥

तमेवं भृत्वा समुद्रमभ्यवजहार। स यतिथीं तत्समां परिदिदेष ततिथीं समां नावमुपकल्प्योपासांचक्रे स ऽऔघऽ उत्थिते नावमापेदे तं स मत्स्य उपन्यापुप्लुवे तस्य शृङ्गे नावः पाशं प्रतिमुमोच तेनैतमुत्तरं गिरिमतिदुद्राव॥ ५॥

स होवाचापीपरं वै त्वा व्वृक्षे नावं प्रतिबध्नीष्व तं तु त्वा मा गिरौ सन्तमुदकमन्तश्छैत्सीद्यावदुदकं समवायात्तावत्तावदन्वव्वसर्पासीति स ह तावत्तावदेवान्वव्वससर्प तदप्येतदुत्तरस्य गिरेर्मनोरवसर्पणमित्यौघो हताः सर्वाः प्रजा निरुवाहाथेह मनुरेवैकः परिशिशिषे॥६॥

22.4.1 मूलपाठ की व्याख्या (मनुमत्स्य कथा)

मनवे ह वै प्रातः। अवनेग्यमुदकमाजह्रुर्यथेदं पाणिभ्यामवनेजनायाहरन्त्येवं तस्यावनेनिजानस्य मत्स्यः पाणी आपेदे॥ १॥

टिप्पणियाँ

व्याख्या – मनवे ह वै। यहाँ इडाब्राह्मण है। वहाँ ईडायां मानवीम् ईडां देवतां वक्तुं मानवी घृतपदी मैत्रावरुणी (तै०सं०२.६.७.६, तै०ब्रा० ३.४.८.१, २३.२, आ०श्रौ० १.७.७) इस वेद पद की व्याख्या करने में प्रवृत हुए।जल प्रलय भारतीय इतिहास में एक ऐसी घटना है जो मनु को देवो से विशिष्ट और मानवो की एक भिन्न संस्कृति प्रतिष्ठित करने का अवसर दिया मनु भारत के इतिहास के आदि पुरुष है। मनवे वैवस्वताय तादर्थ्य अर्थ में चतुर्थी। हाथ आदि दोने के लिए। करण में कृत्य प्रत्यय करने पर। लाओ अब हाथ धोने के लिए जल को लाया। उस मनु के हाथ धोते समय मछली उसके हाथ को प्राप्त हुई। भाविनी पृथ्वी की सिद्धि के लिए देवता ही मत्स्यरूप से आये।।१।।

सरलार्थ– प्रातः मनु के समीप हाथ थोने के लिए जल लाये थे। जब मनु हाथ आदि साफ कर रहे थे, तब एक मछली उनके हाथ पर गिरी।

व्याकरण

- **अवनेग्यम्** – अवपूर्वक निज्–धातु से ण्यत्प्रत्यय करने पर।
- **अवनेनिजानस्य** – अवपूर्वक निज्–धातु से शानच करने पर।
- **आजह्रुः** – आङ्पूर्वक ह्र–धातु से लिट् प्रथमपुरुषबहुवचन में।
- **आपेदे** – आङ्पूर्वकपद्–धातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन में।

स हास्मै व्वाचमुवाद। बिभृहि मा पारयिष्यामि त्वेति कस्मान्मा पारयिष्यसीत्यौघ इमाः सर्वाः प्रजा निर्वोढा ततस्त्वा पारयितास्मीति कथं ते भृतिरिति॥२॥

व्याख्या – वह मछली मनु से कहती है। किसी प्रकार तुम मेरा भरण पोषण करो। किसलिए पालन करू, पाल रक्षण धातु में (धा १०.७५) अथवा तुम्हारी रक्षा करू। किससे वह भयहेतु में प्रश्न। वहतीति औघः जलसङ्घात। वह यह भारतवर्ष निवासी सभी प्रजानिःशेषदेशान्तर को प्राप्त करने के लिए उस भय हेतु से तुम्हारा पालन करुँगी। यह मछली का वचन है। कैसे यह मनु के प्रश्न। तुम्हारा भरण पोषण कैसे करते है।। २।।

सरलार्थ – वह मछली उनसे कहती है कि –आप मेरा पालन करो। मैं तुम्हारी रक्षा करुँगी। तब मनु ने कहा की तुम कैसे मेरी रक्षा करोगी। तब मछली ने कहा की विशालजल प्रलय के समय समस्त प्राणिमण्डल जल में लीन हो जायेगा। उससे तुम्हारी मैं रक्षा करुँगी।

व्याकरण

- **उवाद** – वद्–धातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन में।
- **निर्वोढा** – निर् पूर्वक वह–धातु से लुट एकवचन में वैदिक प्रयोग है।

स होवाच। यावद्वै क्षुल्लका भवामो बह्वी वै नस्तावन्नाष्ट्रा भवत्युत मत्स्य एव मत्स्यं गिलति कुम्भ्यां माऽग्रे बिभरासि स यदा तामतिव्वर्धा अथ कर्षूं खात्वा तस्यां मा बिभरासि स यदा तामतिव्वर्धाऽअथ मा समुद्रमभ्यवहरासि तर्हि वा अतिनाष्ट्रो भवितास्मीति॥३॥

व्याख्या – क्षुद्रक कम। नाश यह। गृ निगरणे (धा० ६.१२९)। निगलना। भरण करो। अध्येषणा में लिङर्थे लेट् (३.४.७)। भरण पोषण करने के लिए। मैं ही उपासको से अभिव्यवृत होती हूँ जल आदि के द्वारा इस प्रकार व्याख्या की। अतिवर्द्धै अत्यधिक वृद्धि को प्राप्त होने पर लिङर्थे लेट्(३.४.७) इससे जब योग में लेट्। कर्षू:- छोटा तालाब। "अतीतो नाष्ट्रान् नाशयितघ्न्" इति अतिनाष्ट्र:॥ ३॥

सरलार्थ – उसने (मछली ने) कहा –जब तक हम छोटे है तब तक हमको बड़ा डर लगता है। (विशाल) मछली हमको निगल न जाए। सबसे पहले मुझे घड़े में रखो। जब उसका अतिक्रमण करुँगी तो, तब तालाब में मेरी रक्षा करना। जब उसका भी अतिक्रमण करुँगी तो मुझे समुद्र के प्रति ले जाना। तभी मैं विनाश का अतिक्रमण करुँगी।

व्याकरण

- **उवाच** – वच्-धातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन में।
- **नाष्ट्रा:** – नश्-धातु से ष्ट्रन्प्रत्यय करने पर बहुवचन में।
- **अतिवर्द्धै** – अतिपूर्वक वृध्-धातु से लेट उत्तमपुरुष एकवचन में।
- **अभ्यवहरासि** – अभिपूर्वक अवपूर्वक हृधातु से लेट मध्यमपुरुष एकवचन में।

शश्वद्ध झषऽआस। स हि ज्येष्ठं व्वर्धतेऽथेतिथीं समां तदौघ आगन्ता तन्मा नावमुपकल्प्योपासासै स औघ उत्थिते नावमापद्यासै ततस्त्वा पारयितास्मीति॥४॥

व्याख्या – शश्व शब्द यहाँ पर सामर्थ्य होने से शीघ्र प्रवचन में। छोटी मछली जल्दी ही विशाल मछली बन गई। अथ कैसे वह विशाल मछली बनी। निश्चय रूप से वह विशाल रूप में वृद्धि को प्राप्त हुई। सभी ही जलचर अत्यधिक वृद्धि को प्राप्त होते है, वह तो विशाल मछलियों से भी अत्यधिक वृद्धि को प्राप्त हुई यह श्रुतिवचन है। अथ इतिथीम् यह मत्स्य का वचन। इसका भी समुद्र के लिए व्यवहार किया जाता है। इतिथीम् यह अभिनय, उससे संख्येयां समान देखा। इतना दश को अथवा द्वादश को पूर्ण करने पर इतिथी। यह इशादेशश्छन्द में होने से, टित्त्व से ङीप् होने पर। इयत्यस्तिथयो यस्यां सा इतिथीति कुछ कोषो में। उनमे भी इयतिथीं यावतिथीं तावतिथीम् यह प्राप्त होने पर छान्दस में य शब्द व शब्द का लोप। समा संवत्सर: उन समा को अर्थात संवत्सर में यह अर्थ है। वह स यह लिङ्ग व्यत्यय है। वह पूर्व में कहा गया जल प्रलय जब आएगा तब नाव की रचना करके (मा) मुझे स्मरण करना। और जल प्रलय के बढ़ने पर उस नाव को तुम जल में उतार देना यह अर्थ है।॥४॥

टिप्पणियाँ

सरलार्थ – वह मछली शीघ्र ही विशाल मछली बन गई। वह मछलियों में सबसे विशाल मछली हुई। उसके बाद उसने कहा की –जिस दिन जल प्रलय होगा तब नौका का निर्माण करके प्रतीक्षा करोगे। जल प्रलय के समय नौका में स्थिर होकर के प्रतीक्षा करो। तब मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी।

व्याकरण

- **उपासासै** – उपपूर्वक अस्-धातु से लेट मध्यमपुरुष एकवचन में।
- **आपद्यासै** – आङ्पूर्वक पद्-धातु से लेट मध्यमपुरुष एकवचन में।
- **भृतिः** – भृधातु से क्तिन्प्रत्यय करने पर प्रथमा एकवचन में।

तमेवं भृत्वा समुद्रमभ्यवजहार। स यतिथीं तत्समां परिदिदेष ततिथीं समां नावमुपकल्प्योपासांचक्रे स ऽऔघऽ उत्थिते नावमापेदे तं स मत्स्य उपन्यापुप्लुवे तस्य शृङ्गे नावः पाशं प्रतिमुमोच तेनैतमुत्तरं गिरिमतिदुद्राव॥ ५॥

व्याख्या – जितने दिन अथवा तिथि नाव आदि की रचना करने के लिए, नाव आदि की रचना कर और मछली को स्मरण किया। और जल के उठने पर नाव में आरूढ हुए उस मनु को वह मछली उनको समुद्र से हिमालय की और लेकर जाने लगी। जल प्रलय आया। उस मछली के शृङ्ग पर उस निष्पादित नाव को पाश से (प्रतिमुमोच) बाँध लिया। उस पाश के साथ मछली ने इनको लेकर हिमालय को प्राप्त हुई (अतिदुद्राव)॥ ५॥

सरलार्थ – उस मछली का वैसे ही पालन करके मनु उसको लेकर के समुद्र को गए। वह मछली जिस दिन नौका निर्माण करने के लिए कहा उस दिन ही मनु ने नौका का निर्माण किया। उस जल प्रलय के समय पर वे नौका में चढ़ गए। वह मछली तैरती हुई उनके समीप आई। और उसके सींग के साथ नौका की रस्सी का बन्धन किया। उसके बाद उसको लेकर के उत्तर पर्वत (भाष्य के मत में हिमालय को) की और गई।

व्याकरण

- **अभ्यवजहार** – अभिपूर्वक अव पूर्वक हृधातु से लिट् प्रथम पुरुष एकवचन में।
- **परिदिदेश** – परिपूर्वक दिश्-धातु से लिट् प्रथम पुरुष एकवचन में।
- **उपकल्प्य** – उपपूर्वक कप्प्-धातु से ल्यप् करने पर।
- **प्रतिमुमोच** – प्रतिपूर्वक मुच्-धातु से लिट् प्रथम पुरुष एकवचन में।

स होवाचापीपरं वै त्वा व्वृक्षे नावं प्रतिबध्नीष्व तं तु त्वा मा गिरौ सन्तमुदकमन्तश्छैत्सीद्यावदुदकं समवायात्तावत्तावदन्ववसर्पासीति स ह तावत्तावदेवान्ववससर्प तदप्येतदुत्तरस्य गिरेर्मनोरवसर्पणमित्यौघो हताः सर्वाः प्रजा निरुवाहाथेह मनुरेवैकः परिशिशिषे॥६॥

व्याख्या - उसने कहा। मत्स्यवचन-इस जल प्रलय से मैंने तुम्हारी रक्षा की है। अब तुम यहाँ वृक्ष में नाव को बांध दो। और कुछ काल बाद -पर्वत पर जो जल चढ़ गया है धीरे -धीरे वह नीचे की और उतरेगा तब तक तुम यही पर रहो। यह मेरा आदेश है। जैसे-जैसे जल नीचे की और लौटे वैसे ही तुम नीचे की और उतरना। वैसे-वैसे तुम भी नीचे की और लौटना। वह मनु समय के अनुसार उस उस काल में नीचे की और लौटने लगे (अन्तवससर्प) नीचे की और सर्पण करने लगे। और जिस स्थान पर मनु सबसे पहले उतरे उस हिमालय के स्थान को आज भी मानसरोवर के नाम से जाना जाता है। अवसृप्तोनेनेत्यवसर्पणम्।। ६।।

सरलार्थः - उस (मछली) ने कहा - मैंने तुम्हे इस जल प्रलय से पार कर दिया है। (अब) नौका को वृक्ष से साथ बाँध लो। पर्वत में विद्यमान (तुम्हारी) नौका समुद्रजल से छिन्न नही होगी। जब नौका जल के प्रति जाए, तब तुम भी वैसे ही नीचे की और गमन करना। तब (मनु) ऊपर से नीचे आये। उत्तरपर्वत का वह स्थान अवतरणमार्ग (अवसर्पण) इस नाम से प्रसिद्ध है। उस जल प्रलय से समस्त प्राणि विनाश को प्राप्त हुए, केवल मनु ही वहाँ शेष बचे थे।

व्याकरण

- **अपीपरम्** - पृ-धातु से लुङ उत्तमपुरुष एकवचन में।
- **निरुवाह** - निर् पूर्वक वह्-धातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन में।
- **परिशिशिषे** - परिपूर्वक शिष्-धातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन में।
- **समवायात्** - सम्पूर्वक अवपूर्वक इधातु से विधिलिङ प्रथमपुरुष एकवचन में।

पाठगत प्रश्न 22.3

1. किस समय मनु के हाथ आदि धोने के लिए जल लेकर के आये?
2. मछली मनु के किस अंग पर गिरी?
3. आजह्रुः यह रूप कैसे सिद्ध हुआ?
4. अवनेग्यम् यह रूप कैसे सिद्ध हुआ?
5. निर्वोढा यह रूप कैसे सिद्ध हुआ?
6. गृधातु किस अर्थ में होती है?
7. भृतिः इसका क्या अर्थ है?
8. नाष्ट्राः यह रूप कैसे सिद्ध हुआ?
9. अभ्यवहरासि यह रूप कैसे सिद्ध हुआ?

टिप्पणियाँ

10. शश्वद्ध झष... इस मन्त्र के अंश में शश्वच्छब्द किस प्रकार का है?
11. परिदिदेश यह किस लकार में बनता है?
12. परिमुमोच यह किस लकार का रूप है?
13. अपीपरम् यहा पर क्या धातु है?
14. किसके साथ नौका को रस्सी से बाँधा?
15. उपासासै यह रूप कैसे हुआ?

22.5 मनुमत्स्य कथा

मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्। इस प्रकार वेद के प्रथम भाग देवस्तुतिमूलक मन्त्रभाग है। द्वितीयभाग में ब्राह्मण है। प्रत्येक वेदो के पृथक् पृथक् ब्राह्मण प्राप्त होते है। कृष्णयजुर्वेद के ब्राह्मण का नाम तैत्तिरीयब्राह्मण है। शुक्लयजुर्वेद के ब्राह्मण का नाम शतपथब्राह्मण है। इस शतपथब्राह्मण में मनुमत्स्य कथा प्राप्त होती है।

कथासार – कभी प्रातः काल हाथ धोने के लिए महर्षि मनु के लिए उनके सेवक जल को लेकर आये। तब हाथ धोते समय कोई छोटी मछली उनके हाथ पर गिरी। वह मछली मनु को कहती है की अब मेरे पालन करो, बाद में मैं तुम्हारा पालन करुँगी। ''कैसे तुम मेरा पालन करोगी'' ऐसा मनु के पूछने पर उस मछली ने कहा है की भविष्य में महा जल प्रलय होगा। पृथिवी की सभी ये प्रजा देशान्तर को प्राप्त होंगे। तब उस जल से मैं तुम्हे पार उतारूंगी। तब कैसे आप मछली का भरण करूंगा, ऐसा मनु के द्वारा पूछा गया। उत्तररूप से मछली ने कहा की जब तक हम छोटी रहती है तब तक हमारे ऊपर विपत्ति होती है। बड़ी मछलियाँ ही छोटी मछली को निगल लेती है। इसलिए प्रारम्भ में मुझे एक घड़े में रखकर मेरा पालन करो, उसके बाद जब मैं बड़ी होऊ तो गड्ढा खोदकर उसमे मेरा पालन करना। उस सरोवर में मेरा पालन करो। उसके बाद जब मैं और बड़ी हो जाऊ तो मुझे समुद्र में लेकर के चले जाना। उसके द्वारा जैसा कहा गया, मनु ने वैसे ही कार्य किया। शीघ्र ही वह मछली एक बड़ी मछली के समान हो गई। मछली ने मनु को कहा की शीघ्र ही जल प्रलय होने वाला है। उससे पहले एक नाव का निर्माण करके मेरी प्रतीक्षा करोगे। जल के ऊठने पर आप नाव में आरोहण करोगे। मैं आपको पार लेकर के जाऊँगी। पूरी बात सुनकर मनु उस मछली को समुद्र में लेकर के गए। समय पर मनु ने एक नाव का निर्माण करके समुद्रतट पर मछली की प्रतीक्षा करते हुए बैठा गये। जल के उठने पर मनु नाव में आरूढ हुए। वह मछली नौका को रस्सी से बांधकर उत्तर दिशा पर्वत की ओर चल दी। मछली ने मनु को कहा की ''अब आप विपत्ति से पार पा चुके हो। यहाँ जल की सीमा का अतिक्रर्मण करके किसी वृक्ष में अपनी नाव को बाँध लीजिए। जैसे जल नीचे की और उतरे उसी प्रकार आप भी उसके अनुरूप ही नीचे की ओर उतरें।'' इति। मनु भी उसी प्रकार नीचे की ओर उतरे। उस जल से सभी प्रजा निःशेष रूप से जलमग्न हो गई थी, मनु ही जीवित रहे और उसी मनु से मनुष्यों की उत्पत्ति हुई, ऐसे मनुष्य अथवा मानव कहलाते है।

तात्पर्यम् – आख्यानब्राह्मणसाहित्य को समृद्ध करते है। उनमे शतपथब्राह्मण के अन्तर्गत मनुमत्स्य कथा नाम का आख्यान अन्यतम है। यहाँ युग के अन्त में सृष्टि को ध्वंस करते हैं, पुनः प्राणियों की सृष्टि के विवरण प्राप्त होता है। यद्यपि बहुत जगह पुराण आदि में इस जल प्रलय की कथा प्राप्त होती है, फिर भी कुछ प्राणियों को जल प्रलय का पूर्वाभास हुआ, नाव का निर्माण किया, पाश से नाव को बन्धन किया, प्लावन के बाद सृष्टि इत्यादिविषयों का एक ही आख्यान में समावेश किया गया है, मनुमत्स्यकथाअन्यत्र नही दिखाई देता है। और यह मछली भगवान् विष्णु के मत्स्यावतार इत्यादि पुराण आदि में प्रसिद्ध है। प्लावन के बाद मनु ने जिस स्थान पर शरण ली वह आज भी मानसरोवर कहलाता है।

पाठ सार (मनुमत्स्य कथा)

मनुमत्स्य कथा में मनु मछली की कथा को प्रतिपादित किया गया है। वहाँ हाथ आदि साफ करते समय एक मछली उनके हाथ पर गिरी। वह मछली अपनी से बड़ी मछलियों से अपनी रक्षा के लिए मनु से प्रार्थना करने लगी। वह मछली प्रतिदिन बढती थी। मनु ने उसकी रक्षा की। मछली ने भी बड़े जल प्रलय के समय मनु को कभी रक्षा के लिए कहा। इस प्रकार बड़े जल प्रलय होने पर वह मछली आई। मनु ने भी एक नौका का निर्माण करके स्वयं को उसमे स्थापित करके मछली के सींगे से बान्धकर उत्तर पर्वत की ओर गए। इस प्रकार संक्षेप से वर्णन किया है।

पाठांत प्रश्न

(पर्जन्यसूक्त में)

1. पर्जन्यसूक्त का सार संक्षेप से लिखो।
2. अच्छा वद तवसं ... इत्यादिमन्त्र की व्याख्या करो।
3. वि वृक्षान् हन्त्युत ... इत्यादिमन्त्र की व्याख्या करो।
4. रथीव कशयाश्वाँ ... इत्यादिमन्त्र की व्याख्या करो।
5. प्र वाता वान्ति ... इत्यादिमन्त्र की व्याख्या करो।
6. यस्य व्रते पृथिवी ... इत्यादिमन्त्र की व्याख्या करो।
7. अभि क्रन्द स्तनय ... इत्यादिमन्त्र की व्याख्या करो।
8. महान्तं कोशमुदचा ... इत्यादिमन्त्र की व्याख्या करो।
9. यत्पर्जन्य कनिक्रदत ... इत्यादिमन्त्र की व्याख्या करो।
10. अवर्षीर्वर्षमुदु ... इत्यादिमन्त्र की व्याख्या करो।

(मनुमत्स्य कथा में)

11. मनुमत्स्यकथा का सार लिखो।
12. स होवाच... इस कथा अंश की व्याख्या करो।
13. शश्वद्ध झषआस... इस कथा अंश की व्याख्या करो।
14. तमेव भृत्वा... इस कथा अंश की व्याख्या करो।
15. स होवाचापीपरम्... इसकी व्याख्या करो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

22.1

1. ऋग्वेद में।
2. अत्रि।
3. पजर्न्य।
4. विपूर्वक वस्-धातु से मध्यमपुरुष एकवचन का यह रूप है।
5. क्रन्द्-धातु से यङ् लुङन्त में प्रथमापुरुष एकवचन का यह रूप है।
6. वृक्षों को गिराता है।
7. ईष्धातु से लट् प्रथमपुरुष एकवचन का यह रूप है।
8. विभाय-भीधातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन का यह रूप है।

22.2

1. आत्मनेपद रा-धातु से लट् मध्यमपुरुषबहुवचन में।
2. असून् प्राणान् राति ददाति इति असुरः।
3. दीया- दी-धातु से लोट मध्यमपुरुष एकवचन में वैदिक रूप है।
4. महान्तं कोशमुदचा नि षिञ्च स्यन्दन्तां कुल्या विषिताः पुरस्तात्।
   घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्यः।।८।।
5. धारण करता है।
6. हंसि- हन्-धातु से लट् मध्यमपुरुष एकवचन में।

22.3

1. प्रात।
2. हाथ में।
3. आङ्पूर्वक हृ-धातु से लिट् प्रथमपुरुषबहुवचन में।
4. अवपूर्वक निज्-धातु से ण्यत्प्रत्यय करने पर।
5. निर्पूर्वक वह्-धातु से लुट एकवचन में वैदिक प्रयोग है।
6. निगलने अर्थ में।
7. भरण पोषण करना।
8. नश्-धातु से ष्ट्रन्प्रत्यय करने पर बहुवचन में।
9. अभिपूर्वक अवपूर्वक हृ-धातु से लेट मध्यमपुरुष एकवचन में।
10. सामर्थ्य से क्षिप्रवचनः।
11. लिट्।
12. लिट्।
13. पृधातु।
14. वृक्ष से।
15. उपपूर्वक अस्-धातु से लेट मध्यमपुरुष एकवचन में।

॥ बाईसवाँ पाठ समाप्त ॥